दूसरों की गलतियों से सीखो, अगर अपने ही ऊपर प्रयोग करके सीखने का प्रयास करोगे तो आयु कम पड़ जाएगी।

तेवर वही, अंदाज नया ......!

साप्ताहिक

उज्जैन टाइम्स

डाक पंजीयन संख्या मालवा संभाग
L2/65/RNP/397/2024-26

प्रधान सम्पादक : मनमोहन शर्मा

RNI No. 7583/61

Connect with Ujjain Times : www.ujjaintimes.in @UjjainTimes UjjainTimes UjjainTimes734 Channel : Ujjain Times

● वर्ष : 63, अंक : 43 ● उज्जैन, युगाब्ध-5123, विक्रम संवत् 2081 मंगलवार दिनांक 23-07-2024 से 29-07-2024 तक ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 2 रुपये

श्रावण के प्रथम सोमवार को बाबा श्री महाकाल मनमहेश के रूप में नगर भ्रमण पर निकलेंगे

उज्जैन। विश्व प्रसिद्ध बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक दक्षिणमुखी भगवान श्री महाकालेश्वर की श्रावण-भाद्रपद माह में निकलने वाली सवारियों के क्रम में श्रावण माह के पहले दिन ही सोमवार 21 जुलाई को सवारी नगर भ्रमण पर अपने भक्तों को दर्शन देने के लिये परम्परागत मार्ग से निकाली जावेगी।

श्री महाकालेश्वर मंदिर प्रबंध समिति के प्रशासक एवं अपर कलेक्टर श्री मृणाल मीना ने बताया कि, भगवान श्री महाकालेश्वर की प्रथम सवारी ठाठ-बाट से परम्परागत मार्ग से निकाली जायेगी। पालकी में भगवान मनमहेश के स्वरूप में अपने भक्तों को दर्शन देने के लिये नगर भ्रमण पर निकलेंगे। भगवान श्री महाकालेश्वर के श्री मनमहेश स्वरूप का विधिवत पूजन-अर्चन महाकाल मन्दिर के सभा मण्डप में होने के पश्चात भगवान श्री मनमहेश पालकी में विराजित होकर नगर भ्रमण पर निकलेंगे।

भगवान की सवारी मन्दिर से अपने परंपरागत निर्धारित समय शाम 4 बजे निकलेगी

मन्दिर के मुख्य द्वार पर सशस्त्र पुलिस बल के जवानों द्वारा पालकी में विराजमान भगवान श्री मनमहेश को सलामी (गार्ड ऑफ ऑनर) दी जायेगी। भगवान श्री महाकालेश्वर की पालकी मन्दिर से निकलने के बाद महाकाल रोड, गुदरी चौराहा, बक्षी बाजार और कहारवाड़ी से होती हुई रामघाट पहुंचेगी। जहां शिप्रा नदी के जल से भगवान का अभिषेक और पूजन-अर्चन किया जायेगा। इसके बाद सवारी रामानुजकोट, मोढ़ की धर्मशाला, कार्तिक चौक, खाती का मन्दिर, सत्यनारायण मन्दिर, ढाबा रोड, टंकी चौराहा, छत्रीचौक, गोपाल मन्दिर, पटनी बाजार, गुदरी बाजार से होती हुई पुनः श्री महाकालेश्वकर मन्दिर पहुंचेगी।

प्रशासक श्री मृणाल मीना ने बताया कि, माननीय मुख्यमंत्री जी डॉ. मोहन यादव की मंशानुरूप जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद के माध्यम से भगवान श्री महाकालेश्वर जी की सवारी में जनजातीय कलाकारों का दल भी सहभागिता करेगा। धार के भील जनजातीय भगोरिया नृत्य के सदस्यों का दल सवारी में प्रस्तुति हेतु सम्मिलित होगा।

- 2 चलित रथ के माध्यम से बाबा महाकाल की सवारी का लाइव प्रसारण किया जाएगा। इस चलित रथ की विशेषता यह है कि, इसमें लाइव बॉक्स रहेगा, जिससे लाइव प्रसारण निर्बाध रूप से होगा।
- सवारी के दौरान श्रद्धालुओं से अपील की जाती है कि कृपया सवारी मार्ग में सड़क की ओर व्यापारीगण भट्टी चालू न रखें और न ही तेल का कड़ाव रखें।
- दर्शनार्थी सवारी में उल्टी दिशा में न चलें और सवारी निकलने तक अपने स्थान पर खड़े रहें।
- दर्शनार्थी कृपया गलियों में वाहन न रखें।
- श्रद्धालु सवारी के दौरान सिक्के, नारियल, केले, फल आदि न फेंकें।
- सवारी के बीच में प्रसाद और चित्र वितरण न करें।
- इसके अलावा पालकी के आसपास अनावश्यक संख्या में लोग न रहें।
- मंदिर के जिस मुख्य द्वार से राजाधिराज महाकाल की पालकी नगर भ्रमण के लिए निकलेगी, केवल पारंपरिक नौ भजन मंडलियां व झांझ डमरू दल को सवारी में शामिल किया जाएगा।

पूर्व सांसद जयाप्रदा ने किए बाबा महाकाल के दर्शन

उज्जैन। गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर अभिनेत्री जयाप्रदा बाबा महाकाल मंदिर के दर्शन के लिए पहुंची एवं बाबा महाकाल के दर्शन किए फिल्म अभिनेत्री जयाप्रदा ने नंदीहाल से भगवान का पूजन अर्चन और अभिषेक किया उसके बाद नंदी जी के कानों में अपनी मनोकामना भी कहीं बाबा महाकाल की पूजा अर्चना करने के बाद नंदी हाल में बैठकर भगवान महाकाल की भक्ति में लीन नजर आई पूजन पंडित अर्पित गुरु ने किया भगवान के दर्शन के पश्चात जयाप्रदा ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर बाबा महाकाल के दर्शन करने उज्जैन आई हूं मैं बाबा महाकाल की भक्त हूं जब भी मौका मिलता है तो बाबा के दर्शन के लिए आ जाती हूं मुझे बाबा महाकाल पर पूर्ण विश्वास है वही हमारा शुभ मंगल करते हैं भगवान शिव हमेशा साथ रहते हैं भगवान महाकाल में मेरी आस्था है आपके साथ युवा समाजसेवी राहुल पंड्या ने बताया कि इंदौर में आयोजित फैशन शो में फिल्म अभिनेत्री जयाप्रदा शनिवार को पहुंची थी आपने बाबा महाकाल के दर्शन की इच्छा जाहिर की बाबा महाकालेश्वर के दर्शन किए।

शिक्षा के क्षेत्र में एक जाना माना नाम
महर्षि सांदीपनि पब्लिक हाई स्कूल

महर्षि सांदीपनि पब्लिक हाई स्कूल विगत 24 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में एक जाना माना नाम है। उज्जैन शहर में 13 बच्चों की संख्या से प्रारंभ विद्यालय आज 1500 बच्चों का सुखद भविष्य गढने हेतु प्रयत्नरत है। विद्यालय अपनी प्री प्रायमरी नर्सरी व के.जी. की कक्षाओं में नवाचार के लिए प्रसिद्ध है। अपने पाल्य के प्रवेश हेतु निवेदन है कि एक बार अवश्य विद्यालय का अवलोकन करे।

प्राचार्य
● भारती महेश तिवारी

सम्पादकीय

सर्पदंश से सबसे ज्यादा मौतें भारत में

बरसात के मौसम में जलभराव और उमस भरी गर्मी की वजह से सांप अपने बिल से बाहर निकलकर सुरक्षित ठिकाने ढूंढने लगते हैं और इस कारण सर्पदंश की घटनाएं भी बढ़ जाती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक, दुनिया भर में हर साल लगभग पैंतालीस से चौवन लाख लोग सर्पदंश का शिकार होते हैं, जिनमें से करीब एक लाख अड़तीस हजार लोगों की मौत हो जाती है। सर्पदंश के अधिकांश मामले अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका में सामने आते हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के आंकड़ों से पता चलता है कि भारत में सालाना तीस से चालीस लाख सर्पदंश की घटनाएं होती हैं, जिनमें से करीब पचास हजार लोगों की मौत हो जाती है। विशेषज्ञों के मुताबिक, भारत में पाए जाने वाले सत्तर फीसद सांप या तो जहरीले नहीं होते हैं, या फिर उनका विष मनुष्य के शरीर को गंभीर नुकसान नहीं पहुंचाता है। इसके बावजूद विश्व स्वास्थ्य संगठन का दावा है कि सर्पदंश से वैश्विक स्तर पर हर वर्ष होने वाली मौतों में से करीब चालीस फीसद भारत में होती हैं। जाहिर है कि भारत में सामाजिक और सरकारी स्तर पर जागरूकता का अभाव और व्यवस्थागत खामियां व्याप्त हैं। खासकर ग्रामीण इलाकों में आज भी सर्पदंश से पीड़ित को तत्काल अस्पताल ले जाने के बजाय झाड़-फूंक के लिए ओझा के पास ले जाने की घटनाएं आम हैं। बाद में जब पीड़ित को अस्पताल ले जाया जाता है, तब तक इलाज में देरी हो जाती है। यह भी देखा गया है कि सर्पदंश के बाद पीड़ित व्यक्ति बहुत ज्यादा घबरा जाता है और कई बार हृदयाघात से उसकी मौत हो जाती है। यों आस्ट्रेलिया के सिडनी विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने सर्पदंश के इलाज के लिए एक नई कारगर दवा बनाने का दावा कर दुनिया में एक नई उम्मीद जगाई है। शोधकर्ताओं का कहना है कि यह दवा न केवल मनुष्य के शरीर में सांप के जहर के फैलने की गति को धीमा कर सकती है, बल्कि यह ऊतक एवं कोशिका के क्षय को रोकने में भी सक्षम है। मगर अपने देश के सरकारी अस्पतालों में सर्प विष-रोधी दवा की कमी से संबंधित खबरें अक्सर आती रहती हैं। ऐसी स्थिति में मरीज को समय पर दवा नहीं मिलने से उसकी मौत स्वाभाविक है। सरकार को इस ओर भी ध्यान देने की जरूरत है।

डिजिटल की आदी हो चुकी दुनिया को माइक्रोसॉफ्ट के सर्वर ने दिया झटका

डिजिटल की आदी हो चुकी दुनिया को माइक्रोसॉफ्ट के ठप हुए सर्वर ने ऐसा झटका दिया, जिसे कुछ क्षणों के लिए उनको गुजरा जमाना याद आ गया। सर्वर की तकनीकी खराबी ने तबाही मचा दी। चारों ओर कोहराम मच गया। दुनिया थोड़ी देर के लिए सोचने पर मजबूर हो गई। महानगरीय लोग भी देशी तरीकों से बड़े चाव और खुशहाल जीवन जी लेते थे। ग्रामीण आबादी तो बिना सुविधाओं के बिना हारी-बीमारी और अभावों में ही अच्छा जीवन जिया करते थे। हालांकि अब ग्रामीण अंचल भी सुविधा संपन्न हैं। महानगरों जैसी सुविधाएं गांव-देहातों में पहुंच चुकी हैं। इंटरनेट, एटीएम, पेटीएम, क्यूआरकोड, फिल्पकार्ड, एमोजोन, ओटीटी से सभी वाकिफ हैं। कुलमिलाकर उनका जीवन भी डिजिटल हो चुका है। पर, युवा पीढ़ी गुजरे जमाने से अनभिज्ञ है, वो बिना आधुनिक सुविधाओं के रह ही नहीं सकती।

निश्चित रूप से संपूर्ण संसार ने विकास की नई गाथा लिखी है। इंसान धरती से चांद तक पहुंच गया। लेकिन सच ये भी है विकास ही विनाश को जन्म देता है। सर्वाधिक सुविधाएं ही संसार में सन्नाटा पैदा करती हैं। जरा सोचिए, अगर माइक्रोसॉफ्ट का सर्वर एकाध दिनों तक फेल हो जाए, तो मानव जीवन का क्या होगा?

कल्पना करने मात्र से रूह कांप उठती है। बिना इंटरनेट के इंसान निश्चित रूप से अपंग हो जाएगा। क्योंकि उसकी जान ई-तंत्र में जो फंसी है। कहने में कोई हर्ज नहीं है कि आधुनिक युग की डिजिटल निर्भरता ने इंसान को पंगु बनाकर कहीं का भी नहीं छोड़ा। इंसान की लगाम, उसकी गति छोटे से कंप्यूटर रूपी डिब्बे में समा गई है। डिजिटल, इंटरनेट व सर्वर के बिना हम कितने अपाहिज हैं जिसकी तस्वीर हमने 19 जुलाई को खुली आंखों से देखी, इस समस्या पर इंसानी बस भी नहीं चलता। इंसान का प्रत्येक कार्य अब डिजिटल है।

बैंकों में जमा पैसा भी डिजिटलाइट है। वो भी बिना सर्वर चले नहीं निकल सकता। क्योंकि बैंकों अब मैन्युअल कार्यों तक तालाबंदी हो चुकी है।

ग्राहकों की चाहें कितनी भी जरूरत पैसे के वजह से क्यों न रुकी हो। अस्पताल में मरीज भर्ती हों या बच्चों की स्कूलों में फीस भरनी हो। बैंक पैसा तभी रिलीज करेंगी, जब उसका कंप्यूटर चलेगा।

दुनिया मैन्युअल सिस्टम से कहीं आगे जा चुकी है। इसलिए इंसान डिजिटल लत के चलते दिव्यांग हो गया है। उसकी जान कंप्यूटर में घुसी है। पारंपरिक दुनिया हमसे कितनी पीछे छूट गई है और ई-व्यवस्था हम पर कितनी निर्भर हो गई जिसकी हल्की-सी झलक कुछ घंटों के माइक्रोसॉफ्ट सर्वर के फेलियर से पता चल गई। ये तय तारीख हमें गंभीरता से सोचने पर विवश करती है।

तारीख 19 जुलाई, दिन शुक्रवार समय सुबह 5 बजे से लेकर रात 8 बजे तक समूची दुनिया मानो थम गई। चालू व्यवस्था पर ब्रेक लग गया, पूरा जगत ठहर सा गया।

अमेरिका से लेकर भारत तक हजारों विमान बिना उड़े बिना रनवे पर खड़े रहे। इसके अलावा बैंकिंग से लेकर मीडिया, रेलवे, टेलिकास्ट विंग, स्टॉक एक्सचेंज, कॉरपोरेट जगत व विभिन कंपनियों के कामकाज भी ठप हुए। शेयर बाजार एकदम धड़ाम से नीचे गिरा। क्या हिंदुस्तान, क्या अमेरिका, पूरी दुनिया में अफरातफरी का माहौल बन गया।

सर्वर की गड़बड़ी की शुरूआती जांच में अमेरिकी एंटी-वायरस को बताया गया। जिसका प्रभाव सबसे पहले एयरलाइंस के संचालनों पर पड़ा, उनका सॉफ्टवेयर अचानक डाउन हो गया।

कर्मचारी काफी देर तक अपने सिस्टमों को रिस्टार्ट और ऑन-ऑफ करते रहे, घंटों कोई रिस्पांस नहीं मिला। अमेरिका के अलावा कई देशों में आपात बैठकें बुलाई गईं।

हमारी केंद्र सरकार में भी खलबली मची, एयर अथॉरिटी को सफाई देनी पड़ी। पर, स्थिति को जैसे-जैसे काबू में किया गया।

कुछ घंटों बाद जब पता चला कि दुनिया का मुख्य क्राउडस्ट्राइक सॉफ्टवेयर ही डाउन हो गया तो सुनकर सभी के होश उड़ गए। आईटी कंपनियों के कार्यालयों में तो भगदड़ जैसे हालात हो गए।

आईटी एमएनसी कंपनियां तो टोटली डिजिटल हैं। डिजिटल जंजाल में फंस चुकी दुनिया अब बाहर भी नहीं निकल सकती। क्योंकि दुनिया की आदत हो चुकी है। मैन्युअल कामों से इंसानों ने तौबा कर लिया। मार्डन जमाने में ई-व्यवस्था का नशा मनुष्य के सिर चढ़कर बोल रहा है।

सर्वर खराबी के कारण बेशक खोज लिए गए हां, लेकिन करीब 15 घंटे तक दुनिया की सांसे थमी रहीं। क्राउडस्ट्राइक एक अग्रणी साइबर सुरक्षा कंपनी है जो उन्नत खतरे की खुफिया जानकारी और एंडपॉइंट सुरक्षा प्रदान करती है।

उनके सॉफ्टवेयर समाधान संगठनों को वास्तविक समय में साइबर खतरों का पता लगाने, रोकने और उनका जवाब देने में मदद करते हैं, जिससे मजबूत सुरक्षा और मन की शांति सुनिश्चित होती है। खुदा न खास्ता अगर ये जाम हो जाए यानी सर्वर डाउन, तो पूरा सिस्टम हैंग हो जाता है, जो उस दिन हुआ। माइक्रोसॉफ्ट के फेलियर से भारत की बैंकिंग सेवाएं पूरी तरह चरमराई थीं जिससे कंपनियां और आम ग्राहकों को अनगिनत वित्तीय नुकसान हुआ।

हालांकि, भारत के निजी बैंक क्राउडस्ट्राइक सिस्टम का प्रयोग नहीं करते? सिर्फ आरबीआई और अन्य 10 बैंकें इसका इस्तेमाल करती हैं। वरना, स्थिति और खराब हो जाती।

ट्रांसपोर्ट सिस्टम पूरी तरह डिजिटल के गिरफ्त में है। लोगों के यातायात के साधन अब बैलगाड़ी या सामान्य मोटरवाहन नहीं रहे। संपन्न आबादी समय की बचत को ध्यान में रखकर ज्यादा हवाई आवाजाही करते हैं। गनीमत रही कि सर्वर खराबी के बाद सुबह के शिड्यूल में लगी सभी फ्लाइटें रोकी गईं।

एयरलाइंस यात्री एयरपोर्ट में भी नहीं घुस पाए, इसके लिए उन्होंने हंगामा काटा। हंगामा देख एयरपोर्ट अथॉरिटी ने यात्रियों को मैन्युअल चेक इन से बोर्डिंग कराई। लेकिन अंदर जाकर भी उन्हें घंटों इंतजार करना पड़ा।

विमानन सेवाएं सुबह 10 बजे से ठप रहीं। सर्वर डाउन होने से विमानों को तत्काल प्रभाव से उड़ने से रोका गया। क्योंकि एयरलाइंस सिस्टम पूरी तरह से क्राउडस्ट्राइक सार्फ़टवेयर पर निर्भर हैं। एयरलाइंस के टिकटों की बुकिंग और चेक इन सर्विस कंप्यूटर आधारित होते हैं।

ऐसे में उड़ चुका विमान तो सिर्फ ईश्वर भरोसे ही होता है। ऐसे स्थिति दोबारा भविष्य में न हो, इसके लिए माइक्रोसॉफ्ट निर्माताओं को सुनिश्चित करना चाहिए।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य दावा विनिमय क्या है?

नेशनल हेल्थ क्लेम्स एक्सचेंज या NHCX प्लेटफॉर्म आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के हिस्से के रूप में राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (NHA) और केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा विकसित एक सिंगल-विंडो डिजिटल प्लेटफॉर्म है।

इसे भुगतानकर्ताओं (बीमाकर्ता, तृतीय-पक्ष प्रशासक, सरकारी योजना प्रशासक) और प्रदाताओं (अस्पताल, प्रयोगशालाओं, पॉलीक्लिनिक), लाभार्थियों और दावा प्रक्रिया में शामिल विभिन्न खिलाड़ियों के बीच दावों से संबंधित जानकारी के आदान-प्रदान के लिए एक प्रवेश द्वार के रूप में सोचें। अन्य प्रासंगिक संस्थाएँ एक ही स्थान पर।

मूल रूप से, यह एक ऐसी जगह है जहां सभी बीमाकर्ता सीधे अस्पतालों के साथ बातचीत करेंगे और तेजी से निपटान प्रक्रिया प्रदान करेंगे। तेजी से दावों के निपटान के लिए सभी प्रक्रियाओं को मानकीकृत किया जाएगा।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य दावा विनिमय कैसे काम करेगा?

राष्ट्रीय स्वास्थ्य दावा विनिमय पोर्टल अस्पतालों और बीमा कंपनियों के बीच सूचना और दस्तावेजों के निर्बाध आदान-प्रदान के माध्यम से स्वास्थ्य बीमा दावा निपटान प्रक्रिया को सरल, तेज और मानकीकृत करने के लिए तैयार है।

उद्देश्य-

1. बीमा आधार बढ़ाने के लिए बीमा पॉलिसियों में ओपीडी और फार्मेसी बिल जैसे नए प्रकार के दावे जोड़े जाने चाहिए।

2. स्वतः निर्णय, नियंत्रण धोखाधड़ी और दुरुपयोग की रोकथाम के लिए नई प्रक्रियाओं/नियमों को सक्षम करके बीमा नवाचार को सुविधाजनक बनाना।

3. परिचालन ओवरहेड्स को कम करने और पारदर्शी और नियम-आधारित तंत्र के माध्यम से भुगतानकर्ताओं और प्रदाताओं के बीच विश्वास बढ़ाने के लिए दावा प्रक्रिया को मानकीकृत किया गया।

एनएचसीएक्स कैसे काम करता है?

पहले संस्करण में, NHCX कैशलेस दावों के लिए संदेश आदान-प्रदान की सुविधा पर केंद्रित है और निम्नलिखित सूचना प्रवाह के लिए विशिष्टताएँ प्रदान करता है-

1. प्रदाता/भुगतानकर्ता विवरण प्राप्त करें।

2. लाभार्थी के लिए पात्रता जांच-जांच कवरेज पात्रता/पैकेज या प्रक्रिया पात्रता के लिए हो सकती है।

3. पूर्व प्रमाणीकरण अनुरोध और अनुमोदन प्रवाह-पूर्व-निर्धारण, पूर्व-प्राधिकरण के रूप में दावा प्रकार।

4. दावा अनुरोध और अनुमोदन प्रवाह-दावा प्रकार और दावा/भुगतान अधिसूचना।

5. दावों का पुनर्प्रसंस्करण-दावे की आंशिक स्वीकृति या अस्वीकृति के मामले में।

6. स्थिति जांच, नियामक अनुपालन आदि के लिए दावा डेटा खोजें/लाएं। यह आपकी दावा प्रक्रिया को कैसे प्रभावित करेगा?

वर्तमान में दावा दायर करने की प्रक्रिया-

1. अब कैशलेस दावों के लिए आवेदन करते समय पॉलिसीधारक को संबंधित फॉर्म और दस्तावेजों के साथ अस्पताल में एक स्वास्थ्य बीमा कार्ड जमा करना होगा।

2. फिर अस्पताल मैन्युअल रूप से दावा प्रपत्र भरते हैं, दस्तावेज स्कैन करते हैं, और इन्हें बीमा कंपनियों या तीसरे पक्ष प्रशासकों के कई पोर्टलों पर अपलोड करते हैं।

3. बीमाकर्ता की ओर से, डेटा को डिजिटल किया जाता है, मैन्युअल रूप से प्रमाणित किया जाता है और निर्णय लिया जाता है। फिर बीमाकर्ता या टीपीए बीमाधारक की छुट्टी की।

प्रक्रिया के लिए दस्तावेजों को वापस अस्पताल भेजता है।

एनएचसीएक्स की शुरूआत के साथ-

अधिकांश प्रक्रियाएं डिजिटलीकृत और स्वचालित होंगी।

1. एक सामान्य दावा प्रारूप होगा जिसका उपयोग सरकारी या निजी स्वास्थ्य बीमाकर्ताओं और एनएचए द्वारा परिभाषित अस्पतालों में किया जाएगा।

2. अस्पताल बीमाकर्ता के आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता (एबीएचए) नंबर के माध्यम से उसके डिजिटल विवरण तक पहुंच सकते हैं।

3. एनएचसीएक्स पोर्टल निर्दिष्ट बीमाकर्ता को भेजने से पहले विवरणों को स्वचालित रूप से सत्यापित करेगा।

4.बीमाकर्ता इसे डिजिटल रूप से सत्यापित करेगा और निर्णय देगा, और अस्पताल डिस्चार्ज की प्रक्रिया करेगा।

स्वास्थ्य बीमा पॉलिसीधारकों के लिए, NHCX प्लेटफॉर्म दावा निपटान प्रक्रिया को तेज करेगा जिससे अस्पताल से छुट्टी मिलने का प्रतीक्षा समय कम हो जाएगा।

इससे बीमा कंपनी द्वारा संसाधित प्रत्येक दावे के लिए दावा प्रसंस्करण लागत कम होने की भी उम्मीद होगी, जिससे बीमाकर्ता की परिचालन लागत में कमी आएगी।

एनसीएचएक्स बीमाकर्ताओं के बीच दावा निपटान प्रक्रिया को मानकीकृत करने का एक शानदार तरीका है। यदि इसे पूरे देश में लागू किया जाता है, तो दावों के निपटान में व्यापक सुधार होगा।

एटम बम से भी खतरनाक है साइबर अटैक

गाजियाबाद। साइबर अटैक एटम बम से भी खतरनाक हो सकता है। साइबर हमला ऐसा होता है, जो न केवल एक इंसान, बल्कि दुनिया को तबाही के मुहाने पर पहुंचा सकता है। साइबर अटैकर किसी भी देश या वित्तीय संस्थान को कंगाल कर सकते हैं। यह बात अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में बोलते हुए यूपी के पूर्व पुलिस महानिदेशक प्रकाश सिंह ने कही। इस सेमिनार में साइबर क्राइम सेल के पूर्व पुलिस अधीक्षक प्रो. त्रिवेणी सिंह ने तमाम जानकारियां साझा कीं और साइबर क्राइम से बचाव के लिये बड़ा कार्यक्रम चलाने की सलाह दी। इस ऑनलाइन सेमिनार का आयोजन इलाहाबाद विश्वविद्यालय पुरा छात्रसंघ (अउआ) ने किया था। संस्था के अध्यक्ष पूर्व आईएएस एस.के. सिंह के संचालन और महासचिव नवीन चन्द्रा के संयोजन में सम्पन्न हुए सेमिनार में देश-विदेश के सौ से ज्यादा प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। सेमिनार का उद्घाटन करते हुए पूर्व डीजीपी प्रकाश सिंह ने बताया कि भारत ही नहीं, दुनिया भर के देशों की सरकारें और सुरक्षा एजेसियां साइबर क्राइम के बढ़ते दायरे को लेकर चिंतित हैं। उन्होंने विश्वप्रसिद्ध व्यवसायी वॉरेन बफेट का हवाला देते हुए कहा कि साइबर अटैक एटम बम के अटैक से भी खतरनाक हो सकता है। श्री सिंह ने बताया कि साइबर क्राइम की शिकायतों के मामले में भारत दुनिया का तीसरा बड़ा देश है। यहां हर रोज औसतन 4 हजार साइबर क्राइम दर्ज होते हैं। जो दर्ज नहीं किये जाते, उनकी संख्या इससे कई गुना ज्यादा होती हैं। प्रकाश सिंह ने कहा कि साइबर क्राइम के मामलों से निपटने के लिए केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (आई4सी) की स्थापना की है। पुलिस विभाग नियमित रूप से अधिकारियों व उनके अधीनस्थ कर्मचारियों को साइबर क्राइम से निपटने का प्रशिक्षण देता है लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। हमें जरूरत है ऐसे प्रोफेशनल्स की, जो ऐसे मामलों से निपटने के लिये तकनीकी रूप से सक्षम हों। श्री सिंह ने कहा कि साइबर अपराधी नित नई तकनीक का प्रयोग कर रहे हैं और सम्पन्न लोगों को ब्लैकमेल से लेकर लोगों के एकाउंट व बैंकों से मोटी रकम उड़ा रहे हैं।

भारतीय ऑटो प्रोडक्शन

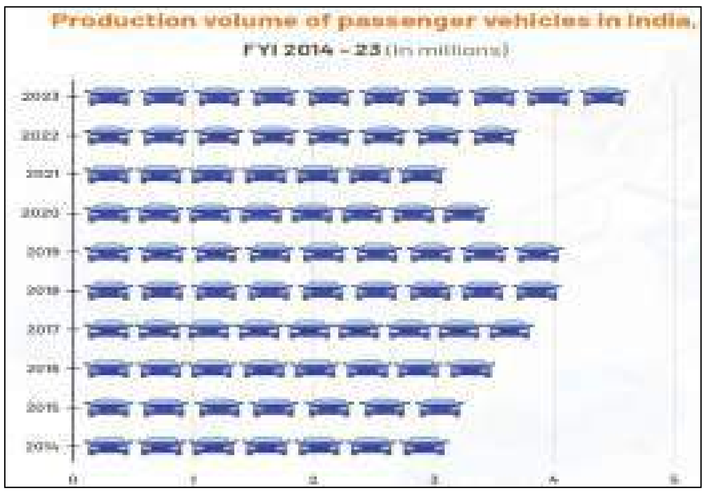

आर्थिक मंदी और महामारी के प्रभावों के बावजूद, वित्त वर्ष 2023 में भारत का यात्री वाहन उत्पादन 4.58 मिलियन तक कैसे पहुंचा ये अपने आप में अभी भी शोध का विषय है।

ऑटोमोटिव क्षेत्र में भारत का प्रभुत्व वैश्विक स्तर पर फैला हुआ है, जिससे यह दुनिया का सबसे बड़ा दोपहिया वाहन निर्माता बन गया है, जिसकी सालाना 21 मिलियन से ज़्यादा यूनिट्स का उत्पादन होता है और यह ट्रैक्टरों का सबसे बड़ा निर्माता है। इसके अलावा, यह दुनिया भर में तीसरा सबसे बड़ा भारी ट्रक निर्माता और चौथा सबसे बड़ा कार निर्माता है।

Nitin Gadre
Additional Chief Secretary (P)

D.O.No.TRN-2024/C.R.69/2024/IAS-1,
General Administration Department,
Mantralaya, Mumbai – 400 032.
Date : 16.07.2024.

Dear Dr. Puja,

As per D.O.letter No.DD(SN)/PA-2024 of Deputy Director & In-Charge Establishment, Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration (LBSNAA), Mussoorie, dated 16.07.2024, it is informed that LBSNAA, Mussoorie has decided to keep your District Training Program on hold and immediately recall you for further necessary action. Therefore, you are hereby relieved from District Training Programme of State Government of Maharashtra. The letter from the Academy is attached herewith.

You are instructed to join the Academy at the earliest but not later than 23rd July, 2024 under any circumstances.

(Nitin Gadre)

Dr. Puja Manorama Dilip Khedkar, IAS
Super Numerary Assistant Collector,
Washim.

पूजा खेडकर @ UPSC आखिरकार LBSNAA Official में वापस बुला लिया गया है।

सोना

सोना अब तक के उच्चतम स्तर पर पहुंचा, 2465 डॉलर प्रति औंस भारत में सोने की कीमतें अब तक के उच्चतम स्तर पर पहुंचीं, 74170 रुपये प्रति 10 ग्राम से ऊपर सितंबर में अमेरिकी ब्याज दरों में कटौती की प्रबल संभावना।

नया कानून

केंद्र ने अधिसूचित किया है कि किसी भी अधिनियम, अध्यादेश, विनियमन, अधिसूचना में IPC, CRPC और Evidene act का कोई भी संदर्भ क्रमशः BNS, BNSS और BSA के संदर्भ के रूप में पढ़ा जाएगा।

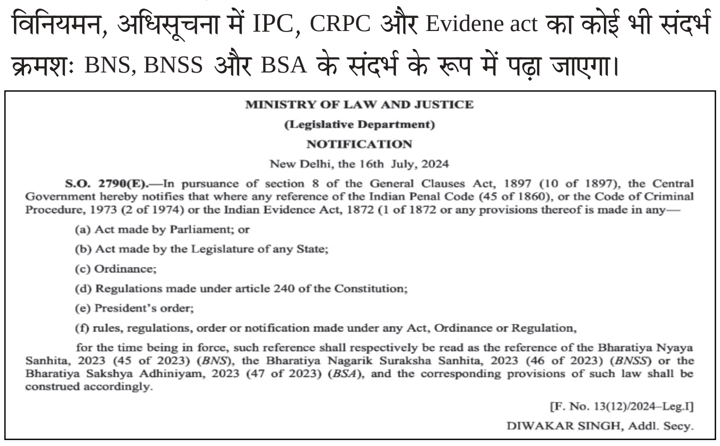

MINISTRY OF LAW AND JUSTICE
(Legislative Department)
NOTIFICATION
New Delhi, the 16th July, 2024

S.O. 2790(E).—In pursuance of section 8 of the General Clauses Act, 1897 (10 of 1897), the Central Government hereby notifies that where any reference of the Indian Penal Code (45 of 1860), or the Code of Criminal Procedure, 1973 (2 of 1974) or the Indian Evidence Act, 1872 (1 of 1872 or any provisions thereof is made in any—

(a) Act made by Parliament; or

(b) Act made by the Legislature of any State;

(c) Ordinance;

(d) Regulations made under article 240 of the Constitution;

(e) President's order;

(f) rules, regulations, order or notification made under any Act, Ordinance or Regulation,

for the time being in force, such reference shall respectively be read as the reference of the Bharatiya Nyaya Sanhita, 2023 (45 of 2023) (*BNS*), the Bharatiya Nagarik Suraksha Sanhita, 2023 (46 of 2023) (*BNSS*) or the Bharatiya Sakshya Adhiniyam, 2023 (47 of 2023) (*BSA*), and the corresponding provisions of such law shall be construed accordingly.

[F. No. 13(12)/2024–Leg.I]
DIWAKAR SINGH, Addl. Secy.

भारत यूनेस्को के लिए प्रेरणा है : ऑद्रे अजोले

विश्व धरोहर समिति की बैठक के उद्घाटन सत्र में यूनेस्को की महानिदेशक ऑद्रे अजोले ने कहा कि भारत ने ऐतिहासिक स्मारकों और विरासत को सहेजने और संरक्षण में कई देशों की सहायता की है। स्वयं अपने देश में 3600 से अधिक ऐतिहासिक विरासत का संरक्षण किया है। भारत यूनेस्को के लिए प्रेरणा है। रविवार को भारत मंडपम में शुरू हुए समिति की बैठक में ऑद्रे अजोले ने सभी का अभिवादन नमस्ते से किया और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार व्यक्त किया। अजोले ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण(एएसआई) ने 160 साल से भारत के 3600 प्राचीन धरोहरों का संरक्षण किया है। विश्व में एएसआई ने कई स्मारकों, प्राचीन धरोहरों का संरक्षण करने में यूनेस्को का सहयोग किया है। विशेषरूप से कंबोडिया में प्राचीन विष्णु मंदिर अंगकोरवाट मे एएसआई ने अभूतपूर्व संरक्षण का काम किया है। भारत की प्राचीन विरासत के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता सभी के लिए प्रेरणादायक है।

उन्होंने उम्मीद जताई कि भारत विश्व के धरोहरों को सहेजने की दिशा में अपना सहयोग देता रहेगा। अजोले ने कहा कि यूनेस्को जो प्राचीन धरोहरों के संरक्षण की दिशा में काम कर रहा है उसके सामने ऐतिहासिक स्मारकों के संरक्षण में चुनौतियां भी अधिक है। जलवायु परिवर्तन और डिजीटल क्रांति युग में भी हम संरक्षण के प्रति दृढ़संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे हैं और इसे आने वाली पीढ़ी को भी सौंपने के लिए तैयार है। इसी उद्देश्य से 31 देशों से आए युवाओं को प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। विश्व धरोहरों का उल्लेख करते हुए महानिदेशक ने कहा कि भारत के सभी 42 विश्व धरोहर भूत, भविष्य और वर्तमान पीढी को दर्शाते हैं। कालबेलिया, गरबा, चांस नृत्य यनेस्को के अमूर्त सूची में शामिल है। भारत की प्रतिबद्धता अपनी धरोहर को संरक्षित और सुरक्षित रखने की दिशा में अभूतपूर्व है। पिछले साल भारत की अध्यक्षता में आयोजित जी 20 की बैठक में विश्व के सतत विकास के लिए संस्कृति और विरासत को केन्द्र में रखा गया।

नीति आयोग

गठबंधन की छाप हर जगह है। NITI Aayog अब NDA सरकार में बड़ा हो गया है, जिसमें 9 विशेष आमंत्रित सदस्य हैं, जिनमें 4 सहयोगी दलों के हैं। पिछली बार 4 विशेष आमंत्रित सदस्य थे, सभी भाजपा से थे।

विक्रम मिस्त्री ने विदेश सचिव का पदभार ग्रहण किया

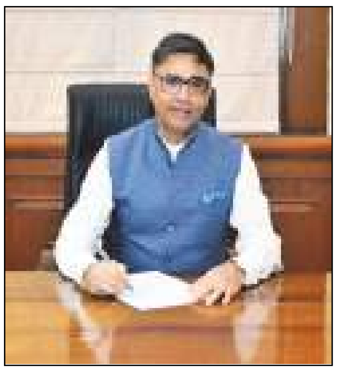

श्री मिस्त्री 1989 बैच के आईएफएस अधिकारी हैं। वह राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय में उप राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार के रूप में कार्यरत थे। उन्होंने चीन, म्यांमार और स्पेन में भारतीय दूत के रूप में काम किया है। उन्होंने विनय मोहन क्वात्रा का स्थान लिया है जिनका कार्यकाल समाप्त हो गया।

पिछले 8 वर्षों में भारत के स्टार्टअप 200 गुना बढ़ गए हैं और 1 मिलियन से अधिक नौकरियाँ पैदा हुई हैं

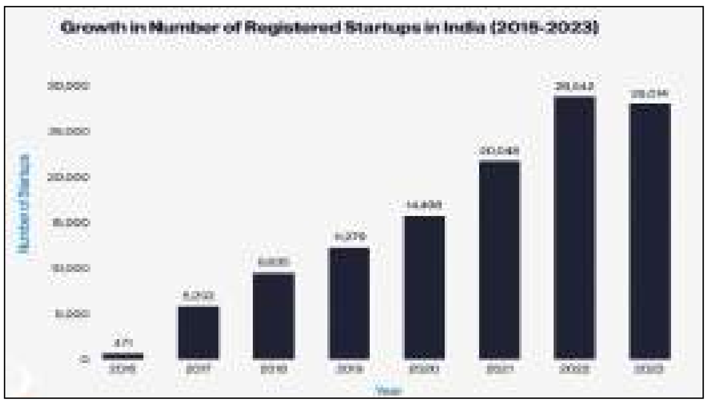

* तकनीक प्रेमी आबादी
* पूंजी (कैपिटल Avl)
* डिजिटल इन्फ्रा
* सरकारी सहायता

फ्लिपकार्ट-मिंत्रा के पूर्व छात्रों द्वारा 500 स्टार्टअप स्थापित किए गए हैं, जिन्होंने सामूहिक रूप से 9 अरब डॉलर जुटाए हैं।

ट्रंप के उपराष्ट्रपति पद के लिए चुने गए जेडी वेंस और उनकी पत्नी उषा चिलुकुरी वेंस की शादी की तस्वीर! उसके पिता जाहिर तौर पर आईआईटी-चेन्नई से हैं।

Apple Sales की तुलना

भारत में Apple की बिक्री 33 प्रतिशत बढ़कर 8 बिलियन डॉलर तक पहुंच गई है। जब की चीन में उसी कंपनी की बिक्री 72.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर है।

संस्कृति समाज का मूल होती है। संस्कृति और सभ्यता का विकास मनुष्य के अपने प्रयत्नों का परिणाम है। लेकिन पीछे कुछेक वर्षों में आधुनिकता के नाम पर सुस्थापित जीवन मूल्यों को कमतर देखा जा रहा है। भारत में प्रचलित आधुनिक सभ्यता पश्चिमी देशों की जीवन शैली की नकल है। शब्द आधुनिकता कालबोधक है। इतिहास के सम्यक अध्ययन के लिए काल विभाजन जरूरी होता है। जैसे प्राचीन काल, मध्यकाल और आधुनिक काल। यह विभाजन सामान्य है। इसके पहले प्रागैतिहासिक काल भी है। इसी तरह वैदिक काल और उत्तर वैदिक काल जैसे विभाजन भी हैं। आधुनिक-काल स्थिर इकाई नहीं है। आधुनिक काल विदा होता रहता है और मध्यकाल में समाता रहता है। भारत का आधुनिक काल भारत के ही मध्यकाल का विस्तार है। इसी तरह मध्यकाल भी। वैदिक काल व प्रागैतिहासिक काल मध्य काल में प्रकट होते हैं। जीवन विकास के प्रारंभिक चरण से लेकर आधुनिक काल तक समाज में बड़े परिवर्तन आए हैं। संप्रति हम लोग भारत के आधुनिक काल में सक्रिय हैं।

भारत के लोगों में आधुनिक हो जाने की जल्दबाजी है

हमारी अनुभूति, सामाजिक मूल्य, जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण और सोच विचार में पूर्ववर्ती सामाजिक मूल्यों की ही पुर्नप्रतिष्ठा है। आज का समाज बीते कल के समाज का विस्तार है। भारत की आधुनिकता हमारी प्राचीनता का ही प्रसाद है।

पश्चिमी देशों ने भारत के प्राचीन समाज के मूल्यों को अपमानित करने का प्रयास किया है। ऋग्वेद के रचनाकाल के पहले यहां सबको आनंदित करने वाली विश्ववरेण्य संस्कृति थी। तबसे लेकर आधुनिक काल तक यहां लगातार सांस्कृतिक निरंतरता है। भारत की आधुनिकता इसी सांस्कृतिक निरंतरता का परिणाम होनी चाहिए।

संस्कृति और सभ्यता जाग्रत मनुष्यों के कर्मतप का विकास है। संस्कृतियां कभी-कभी व्यापक रूप में दूसरे समाज को भी प्रभावित करती हैं और प्रभावित होती भी हैं। भारतीय संस्कृति में विश्व को एक परिवार जानने और तद्नुसार व्यवहार और आचरण करने की प्रकृति है।

संस्कृति में विश्व के सभी प्राणियों का लोकमंगल आराध्य है। इसलिए भारतीय संस्कृति का प्रभाव दुनिया के अनेक देशों पर पड़ा। भारतीय संस्कृति का प्रवाह नेपाल, भूटान, श्रीलंका, कंबोडिया, चंपा और मलेशिया तक व्यापक था। इंडोनेशिया दुनिया की सबसे बड़ी मुस्लिम आबादी वाला देश है। इंडोनेशियाई आज भी भारतीय संस्कृति के प्रति अनुरागी हैं। जापान, कोरिया, मंगोलिया, साइबेरिया, इंग्लैंड, आयरलैंड, मिस्र और ऑस्ट्रेलिया जैसे राज्य भारतीय संस्कृति के प्रशंसक रहे। दक्षिण अफ्रीका, फिजी, मॉरीशस, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद आदि देश इस प्रभाव के साक्षी हैं। भारतीय संस्कृति का अध्ययन राष्ट्र राज्य की सीमाओं से बंधकर नहीं किया जा सकता। संस्कृति विचारधारा से नहीं बनती। अरस्तू, प्लेटो और अलेक्सजेंडर का ग्रीक राष्ट्र कहां है? ग्रीक में दर्शन था। सुंदर विचार पद्धति थी। योग्यता थी। लेकिन सांस्कृतिक राष्ट्रभाव नहीं था। रूस के साथ भी यही बात लागू है। रूस एक राज्य था। जार गया। राजव्यवस्था कम्युनिस्ट हो गई। सांस्कृतिक राष्ट्रभाव नहीं था। सोवियत रूस बिखर गया। रूस बचा है। चीन में दार्शनिक समृद्धि थी। ताओ ते चिंग जैसा दार्शनिक ग्रंथ लाओत्सु ने लिखा था। कम्युनिस्ट राजव्यवस्था के कारण चीन राष्ट्र नहीं बन सका।

कम्युनिस्ट पंथ के जन्मदाता कार्ल मार्क्स ने दुनिया के सामने अपना विशेष दृष्टिकोण रखा था। उन्हीं मार्क्स ने भारत को यूरोपीय मूल्य की भाषाओं और पंथों का जन्म स्थान मानते हुए 1853 में लिखा था, हम निश्चयपूर्वक न्यूनाधिक सुदूर अवधि में उस महान और दिलचस्प देश को पुर्नजीवित होते देखने की आशा कर सकते हैं। जहां के सज्जन निवासी राजकुमार सालितकोव के शब्दों में, इटालियन लोगों से अधिक चतुर और कुशल हैं। यहां के निवासियों की अधीनता भी एक शांत गरिमा से संतुलित रहती है और जिन्होंने अपने सहज आलस्य के बावजूद अंग्रेज अफसरों को अपनी वीरता से चकित कर दिया। इन सज्जन निवासियों का देश हमारी भाषाओं और हमारे धर्म का उद्गम है और जहां पर प्राचीन जर्मन का स्वरूप जाट में और प्राचीन यूनानियों का स्वरूप ब्राह्मण में प्रतिबिंबित है। (मार्क्स-एंजेल्स-द फर्स्ट इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस-पृष्ठ 37) मार्क्स जैसे चिंतक ने भारत की प्रशंसा की थी और अपने पंथों का स्रोत बताया था, उसी भारत में पश्चिमी देशों की सभ्यता आधुनिकता के बहाने समाज की गुणवत्ता समाप्त कर रही है।

संप्रति भारत के लोगों में आधुनिक हो जाने की जल्दबाजी है। समाज के गठन की मूल इकाई परिवार है। इस परिवार में पति और पत्नी परस्पर एक दूसरे की प्रसन्नता के लिए काम करते हैं। वैदिक साहित्य में पत्नी को घर का सम्राट बताया गया है। घर की प्रीति प्राचीन काल में सबको खींचती थी। घर का मतलब ही है जहां बार-बार लौटने का मन करे वह घर है। परिवार के सभी जन परस्पर प्रेम करते हैं और अपना घर का काम भी मिलजुल कर करते हैं। पति-पत्नी का साहचर्य अद्भुत है। ऋग्वेद में बताते हैं कि पति और पत्नी मिलकर सोम रस तैयार करते हैं। पति और पत्नी मिलकर अपने घर भद्र जनों को निमंत्रण देते हैं।

पति और पत्नी अलग-अलग नहीं हैं। दोनों मिलकर एक हैं। भारतीय परंपरा में दोनों के जोड़े को मिलाकर दम्पति कहा गया है। दम्पति में स्त्री पुरुष दोनों समाहित हैं। दो को एक देखने की दृष्टि दाम्पत्य में है। दाम्पत्य जैसा शब्द दुनिया की किसी भाषा में नहीं है। वेदों में भी धरती और आकाश के लिए मिला-जुला एक शब्द है रोदसी। ऋग्वेद में बताते हैं, धरती और आकाश पहले मिले हुए थे और एक थे। मरुदगणों ने धरती और आकाश को अलग कर दिया। विशेष संस्कृति के कारण भारतीय विवाह स्थाई रहते हैं। वैवाहिक सम्बंध टूटने की ज्यादातर घटनाएं पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में हुई हैं और होती हैं। विदेशी सभ्यता के प्रभाव में बिना विवाह के स्त्री पुरुष को साथ-साथ रहना है। अंग्रेजी भाषांतर में इसे लिव इन कहा गया। लिव इन भारतीय धारणा नहीं है। लिव इन विदेशी उधार की आधुनिकता का परिणाम है। तरुणाई में ऊर्जा का अतिरेक होता है। अनुभव कम होते हैं। इसलिए लिव इन की घटनाएं होती हैं। लिव इन टूटता है। स्त्री और पुरुष दोनों ठगे-ठगे रह जाते हैं। भारत में विवाह के समय अग्नि के सात चक्कर लगाना अनिवार्य किया गया है। भारत की विवाह पद्धति, पारिवारिक नेह और स्नेह, घर चलाने का अनूठा संविधान है। इसे पश्चिमी सभ्यता के हमले से बचाना चाहिए।

ऋग्वेद में सूर्य पुत्री सूर्या के विवाह का वर्णन है। बताते हैं कि गांव नगर के सभी वरिष्ठ बहू के स्वागत के लिए एकत्रित होते हैं। वरिष्ठ जनों के आशीष का भाव बार-बार पढ़ने लायक है। ऋषि कहते हैं कि यह बहू पूरे परिवार के सुख का कारण बने। सास ससुर की सेवा करे। सब पर नियंत्रण करे। घर में इसी बहू का राज्य चले।

यह बहू अखण्ड सौभाग्यवती हो। इसके बच्चे परिवार की प्रतिष्ठा बढ़ाएं। पश्चिम के विवाह में भारतीय संस्कृति नहीं है। पश्चिमी जीवनशैली में व्यक्तिवाद है। भारत के जीवन में सामूहिकता है।

उधार की आधुनिकता व्यक्तिवाद बढ़ाती है। व्यक्तिवाद में माता-पिता और परिवार के सदस्य अपनी उपयोगिता के अनुसार सम्मान पाते हैं। यहां माता-पिता की उपयोगिता नहीं देखी जाती। भारतीय जीवनशैली में समूह का हित, समाज का हित और राष्ट्रहित मिलते हैं। संस्कृति में सत्य, शिव और सुंदर का प्रवाह है।

शिष्य निर्माण और राष्ट्रभक्ति की अद्वितीय मिसाल हैं आचार्य सांदीपनि

(डॉ. मोहन यादव)

गुरु पूर्णिमा के पुण्य दिवस पर सभी परम गुरुओं को हार्दिक नमनज अपने ज्ञान के प्रकाश से समृद्ध करने के साथ लक्ष्य प्राप्ति के लिये हमें प्रेरित करने वाले गुरुजन का हृदय से आभार। गुरु हमें ज्ञान, गौरव और गंतव्य का भान कराने के साथ हमारी जीवन यात्रा का मार्गदर्शन करते हैं। गुरु-शिष्य परंपरा में गुरु ज्ञान से स्वयं का साक्षात्कार संभव है। इस ज्ञान की अनुभूति की साक्षी है गुरु पूर्णिमा। गुरु पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं। मान्यता है कि गुरु पूर्णिमा महर्षि वेद व्यास का प्रकटीकरण दिवस है। महर्षि व्यास ने वैदिक ऋचाओं को संकलित कर वेदों का वर्गीकरण, महाभारत तथा अन्य रचनाओं से भारतीय वांग्मय को समृद्ध किया। भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा अति पुरातन है। इस परंपरा से ही व्यक्ति निर्माण से लेकर राष्ट्र निर्माण तक की प्रेरणा में गुरुजन का मार्गदर्शन है।

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर मुझे व्यक्ति निर्माण, समाज निर्माण और राष्ट्र के लिये समर्पित गुरु सांदीपनि जी का स्मरण आता है। लगभग 5 हजार साल पूर्व शिष्यों और समाज के लिये संपूर्ण जीवन समर्पित करने वाले गुरु सांदीपनि जी का जीवन चरित्र हम सभी के लिये आदर्श है। उनके जीवन में कष्ट और दुख की कोई सीमा नहीं थी। उनका राष्ट्र के प्रति समर्पण और अपने शिष्यों के प्रति प्रेम अद्भुत, अनूठा और अलौकिक रहा है जिसकी मिसाल दुनिया में दूसरी नहीं है। सांदीपनि जी का आश्रम मूलतः पहले गंगा किनारे बनारस में स्थापित था जहां उन्होंने अपने शिष्यों को 64 कलाएं, 14 विधाएं, 18 पुराण और 4 वेदों की शिक्षा-दीक्षा देकर प्रशिक्षित करने के लिये गुरुकुल का संचालन किया।

उस समय मथुरा में महाराज उग्रसेन को हटाकर जैसे ही कंस ने सत्ता के सूत्र हाथ में लिये, आचार्य सांदीपनि सहित विश्व के आचार्यों को अपना गुरुकुल बंद करने पड़े। उन्होंने अपना आश्रम छोड़कर तीर्थाटन की राह पकड़ी। अराजकता और अशांति के वातावरण में कोई गुरुकुल कैसे चला सकता है। आचार्य सांदीपनि, अपने 6 माह के पुत्र पुनर्दत्तऔर धर्मपत्नी तीर्थाटन करते हुए पश्चिमी भारत (वर्तमान द्वारिका), प्रभास पाटन के क्षेत्र से तीर्थाटन कर गुजर रहे थे। यह वह समय था जब देश पर आसुरी शक्तियों ने अलग-अलग प्रकार से भारत पर कब्जा जमा लिया था।

आचार्य सांदीपनि की प्रसिद्धी दुनिया भर में फैली थी। हर कोई चाहता था कि उनके बच्चे आचार्य सांदीपनि से दीक्षित-शिक्षित हों। उस समय यहां के नेता यम नाम से जाने जाते थे। उन्होंने आचार्य सांदीपनि से अपने बच्चों को शिक्षित-दीक्षित करने का दबाव डाला। चूंकि आचार्य सांदीपनि की शिक्षा-दीक्षा राष्ट्र और समाज निर्माण के लिये थी इसलिए वे किसी प्रकार के दबाव में नहीं आये और राष्ट्र विरोधी तत्वों को शिक्षा देने के प्रस्ताव को सिरे से नकार दिया। यम द्वारा डराने, धमकाने और यातनाएं देने पर भी आचार्य झुके नहीं और अपने निर्णय पर अटल रहे। आचार्य को प्रताड़ित करते हुए शासकों ने उनके बच्चे को छुड़ा लिया तथा आचार्य और माता को अपमानित कर भगा दिया।

इसके बाद आचार्य उज्जैन आए और सांदीपनि आश्रम स्थापित कर भगवान महाकाल की नगरी उज्जैन में देश के बच्चों के भविष्य निर्माण के लिये शिक्षा-दीक्षा आरंभ की। सांदिपनि आश्रम में भगवान श्रीकृष्ण और उनके भ्राता बलराम को शिक्षा प्राप्त करने के लिए महाकाल की नगरी उज्जैन भेजा गया, जहां उनकी मित्रता सुदामा से हुई। शिक्षा के उपरांत श्रीकृष्ण ने गुरुमाता को गुरु दक्षिणा देने की बात कही। इस पर गुरुमाता ने श्रीकृष्ण को अद्वितीय मानकर गुरु दक्षिणा में अपना पुत्र वापस मांगा। आचार्य सांदीपनी को जब पूरी बात पता चली, तो उन्होंने नाराज होते हुए कहा कि मेरे दुख और मेरी व्यक्तिगत समस्या में मेरे शिष्य को क्यों शामिल किया।

श्रीकृष्ण ने उनके पुत्र को वापस लाने के लिये शस्त्र चाहे। आचार्य ने भगवान परशुराम के आश्रम जानापाव में जाने के लिए कहा। भगवान परशुराम ने श्रीकृष्ण को सुदर्शन चक्र प्रदान करते हुए उसकी विशेषता बताई। भगवान परशुराम की आज्ञा लेकर श्रीकृष्ण प्रभास पाटन जाते हैं। जहां यम नामक असुर से युद्ध कर उसके प्राणों का अंत करते हैं और आचार्य के पुत्र को वापस उज्जैन लाकर गुरु दक्षिणा भेंट करते हैं।

श्रीकृष्ण प्रभास पाटन का राज्य राजा रैवतक को देते हैं। राजा की पुत्री रेवती से बलराम का विवाह होता है। इसके बाद श्रीकृष्ण मथुरा की ओर प्रस्थान करते हैं। इसी युग में आसुरी शक्तियों का विनाश कर योग्य व्यक्ति को राज्य सौंपने का एक और उदाहरण है कि भगवान श्रीकृष्ण ने मथुरा में कंस को मारकर महाराज उग्रसेन को पुनः सिंहासन पर बैठाया था।

काल के प्रवाह में आचार्य सांदीपनि का अपने देश के लिए अद्वितीय योगदान जानना जरूरी है। आचार्य सांदीपनि द्वारा अपने ज्ञान से शिष्य निर्माण और अपने राष्ट्र के प्रति समर्पण एक अद्वितीय मिसाल है। गुरु पूर्णिमा पर आचार्य सांदीपनि जी का यह प्रेरक पक्ष सभी के समक्ष आना चाहिए।

मेरी दृष्टि में, हमारे जीवन में पांच गुरुओं का विशेष महत्व है। सबसे पहली गुरु, माता जो जन्म और जीवन के संस्कार देती है, दूसरे पिता जो साथ, संबल, सहयोग के साथ पुरुषार्थ और पराक्रम का भाव निर्मित करते हैं। तीसरे, शिक्षक जो पाठ्यक्रम में निर्धारित शिक्षा प्रदान कर हमें शैक्षणिक ज्ञान से समृद्ध करते हैं। चौथे गुरु, जिनसे हम आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करते हैं, जो स्वत्व को जागृत कर आत्मज्ञान का बोध कराते हैं और हमें हमारे जीवन की नई ऊंचाइयों और नये लक्ष्यों के लिये प्रेरित करते हैं। पांचवां गुरु आईना है जो, हमें हमारे वास्तविक स्वरूप से परिचित कराता है इससे आत्म-चेतना जागृत होती है और हम अपने व्यक्तित्व और कृतित्व में श्रेष्ठता को प्राप्त कर सकते हैं।

गुरु हमारी प्राकृतिक प्रतिभा का आकलन करके हमारी मौलिक प्रतिभा को जागृत करते हैं, मार्गदर्शित करते हैं। आचार्य सांदीपनि जी ने ऐसे शिष्यों का निर्माण किया है जिन्होंने समाज, राष्ट्र और विश्व कल्याण का इतिहास रचा है।

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर आचार्य सांदीपनि का पुण्य-स्मरण।

(लेखक मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं)

प्रदेश के सभी स्कूल और कॉलेजों में अब हर वर्ष मनाया जाएगा गुरू पूर्णिमा का महापर्व

इंदौर। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भारतीय संस्कृति में गुरुजनों का स्थान सर्वोच्च है। गुरू शिक्षा के साथ ही ज्ञान का प्रसार भी करते हैं। वे अपने शिष्यों को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गुरुजनों का सम्मान भारतीय परंपरा और संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। गुरुजनों के सम्मान के लिए अब प्रदेश में हर वर्ष सभी स्कूल और कॉलेजों में गुरूपूर्णिमा का महापर्व मनाया जाएगा। विद्यार्थियों को गुरुओं की महत्ता बताई जाएगी। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि वे इस आयोजन से जुड़े और गुरुओं के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव इंदौर के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के सभागृह में आयोजित गुरू पूर्णिमा के कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने महाभारत के अनेक प्रसंगों का उल्लेख करते हुए गुरू शिष्य परम्पराओं का महत्व बताया। उन्होंने कहा कि गुरू शिक्षा के साथ ज्ञान भी देते हैं। वे अन्याय एवं अधर्म से लड़ना सिखातें हैं। जीवन जीने की कला सिखाते और शिक्षा एवं ज्ञान का दान करते हैं। इस कार्य में वे अपने कष्टों को भी बाधा नहीं बनने देते हैं। गुरू का साथ मिलते ही शिष्य के जीवन में सकारात्मक बदलाव आता है और वह सफलता की ऊंचाइयों को प्राप्त करने लगता है। उन्होंने कहा कि गुरू-परम्परा समुचित मानवता को धन्य करने की परम्परा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आचार्य सांदीपनि का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए कहा कि गुरुजन राष्ट्रवादी सोच का प्रवाह अपने शिष्यों में करते हैं। आचार्य सांदीपनि इसका बेहतर उदाहरण है। आचार्य सांदीपनि ने अपने ज्ञान से राष्ट्र निर्माण और अपने राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव सिखाया है। गुरुओं का महत्व सबके के सामने आना चाहिए। इसके लिये हमने प्रदेश में हर वर्ष स्कूल और कॉलेजों में गुरू पूर्णिमा का महापर्व पूर्ण आस्था और श्रद्धा के साथ मनाने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि भारत देश को अपने ज्ञान के आधार पर ही विश्व गुरु का दर्जा मिला है। महर्षि पाणिनी संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय के पूर्व कुलगुरू श्री मिथिला प्रसाद त्रिपाठी ने कहा कि गुरुओं का जीवन में अक्षुण्ण महत्व है।

याद रखना, भूल ना जाना वतन पर मिटने वालों को

आजादी के बाद देश की सेनाओं ने चीन के खिलाफ 1962 में और पाकिस्तान के खिलाफ 1948, 1965, 1975 और 1999 में जंग लड़ी। ये सारी लड़ाइयां हम पर थोपी गईं। हमने तो कभी आक्रमण किया ही नहीं। 1987 से 19990 तक श्रीलंका में ऑपरेशन पवन के दौरान भारतीय शांति सेना के शौर्य को भी नहीं भुलाया जा सकता है। 1948 में 1,110 जवान, 1962 में सबसे ज्यादा 3,250 जवान, 1995 में 3,64 जवान, श्रीलंका में 1,157 जवान और 1999 में 522 जवान शहीद हुए। हमारी सेना में ऐसे जवानों की भी कमी नहीं है जो अलगाववादियों को पस्त करते हुए शहीद हुए।

(आर.के. सिन्हा)

कुछ दिन बाद 26 जुलाई को सारा देश कारगिल विजय दिवस के रूप में मनाएगा। उस युद्ध में भारतीय सेना ने सभी बाधाओं को पार करते हुए भारी बलिदान देते हुए भी कारगिल क्षेत्र के बर्फीले पहाड़ों से पाकिस्तान के घुसपैठियों को खदेड़ दिया था। यह भारत का पहला टेलीविजन युद्ध भी था जिसके दौरान टोलोलिंग और टाइगर हिल जैसे अज्ञात निर्जन शिखर सारे देश की जुबान पर आ गए थे। कारगिल युद्ध भारत और पाकिस्तान के बीच मई और जुलाई 1999 के बीच हुआ था। परवेज मुशर्रफ की सरपरस्ती में पाकिस्तान की सेना और कश्मीरी उग्रवादियों ने भारत और पाकिस्तान के बीच की नियंत्रण रेखा पार करके भारत की जमीन पर कब्ज़ा करने की कोशिश की। पाकिस्तान ने दावा किया कि लड़ने वाले सभी कश्मीरी उग्रवादी हैं, लेकिन युद्ध में बरामद हुए दस्तावेजों और पाकिस्तानी नेताओं के बयानों से साबित हो गया था कि पाकिस्तान की सेना प्रत्यक्ष रूप में इस युद्ध में शामिल थी। भारतीय सेना और वायुसेना ने पाकिस्तान के कब्जे वाली जगहों पर हमला किया और धीरे-धीरे अंतरराष्ट्रीय सहयोग से पाकिस्तान को सीमापार घुसपैठ को छोड़, अपने वतन में वापस जाने को मजबूर किया।

गुस्ताखी माफ, कभी-कभी तो लगता है कि रणबांकुरों को लेकर समूचे भारतीय समाज का रुख ठंडा ही रहा है। इससे अधिक निराशाजनक बात क्या हो सकती है कि पाठ्यपुस्तकों में उन युद्धों पर अलग से अध्याय तक नहीं हैं, जिनमें हमारे जवानों ने जान की बाजी लगा दी। हमारे बच्चे आज भी मुगलों और अंग्रेजों के इतिहास ही पढ़ रहे हैं। हां, हम गणतंत्र दिवस और स्वाधीनता दिवस के मौके पर जवानों को याद करने की रस्म अदायगी जरूर कर लेते हैं।

कारगिल युद्ध ऊंचाई वाले इलाके पर हुआ था और भारतीय सेनाओं को पहाड़ियों के नीचे से लड़ने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था। परमाणु बम बनाने के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच हुआ यह पहला सशस्त्र संघर्ष था। अंततः 26 जुलाई 1999 को भारत ने कारगिल युद्ध में विजय हासिल की थी। इसलिए 26 जुलाई हर वर्ष कारगिल विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है। उस करीब दो महीने तक चले युद्ध में भारतीय सेना ने लगभग 527 से अधिक वीर योद्धाओं को खोया था वहीं 1300 से ज्यादा घायल हुए थे। युद्ध में 2700 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए थे।

उन शहीदों के नाम कोई भी राजधानी के राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में जाकर देख सकता हैं। उस जंग में दुश्मन के दांत खट्टे करने वाले शहीद कैप्टन अनुज नैयर की शौर्यगाथा को किसने नहीं सुना? राजधानी के दिल्ली पब्लिक स्कूल, धौला कुआं के छात्र रहे कैप्टन अनुज नैयर जाट रेजिमेंट में थे। कैप्टन अनुज नायर ने कारगिल जंग में टाइगर हिल्स सेक्टर में अपने साथियों के घायल होने के बाद भी मोर्चा सम्भाले रखा था। उन्होंने दुश्मनों को धूल में मिलाकर इस सामरिक चोटी टाइगर हिल्स को शत्रु के कब्जे से मुक्त करवाया था। अब बात करें कैप्टन हनीफुद्दीन की। कैप्टन हनीफुद्दीन राजपूताना राइफल्स के अफसर थे। कैप्टन हनीफुद्दीन ने कारगिल की जंग के समय तुरतुक में शहादत हासिल की थी। कारगिल के तुरतुक की ऊंची बर्फ से ढंकी पहाड़ियों पर बैठे दुश्मन को मार गिराने के लिए हनीफुद्दीन ऊपर से हो रहे गोलाबारी के बावजूद आगे बढ़ते रहे थे। उत्तर प्रदेश के नोएडा के सेक्टर 18 में कैप्टन विजयंत थापर मार्ग है। कैप्टन थापर कारगिल युद्ध में देश के लिए कुर्बानी देने वाले सबसे कम उम्र के जांबाज थे। जून 1999 में कैप्टन विजयंत थापर ने तोलोनिंग पहाड़ी पर विजय हासिल की और भारत का तिरंगा लहराया। ये तो छोटी सी शौर्य गाथाएं हैं हमारे कुछ वीरों की। ये और बाकी तमाम वीरों को इसलिए रणभूमि में अपने प्राणों का बलिदान देना पड़ा, क्योंकि परवेज मुशर्रफ पर एक तरह से पागलपन सवार था। अंततः उसका उसे नुकसान ही हुआ। आजादी के बाद देश की सेनाओं ने चीन के खिलाफ 1962 में और पाकिस्तान के खिलाफ 1948, 1965, 1975 और 1999 में जंग लड़ी। ये सारी लड़ाइयां हम पर थोपी गईं। हमने तो कभी आक्रमण किया ही नहीं। 1987 से 19990 तक श्रीलंका में ऑपरेशन पवन के दौरान भारतीय शांति सेना के शौर्य को भी नहीं भुलाया जा सकता है। 1948 में 1,110 जवान, 1962 में सबसे ज्यादा 3,250 जवान, 1995 में 3,64 जवान, श्रीलंका में 1,157 जवान और 1999 में 522

जवान शहीद हुए। हमारी सेना में ऐसे जवानों की भी कमी नहीं है जो अलगाववादियों को पस्त करते हुए शहीद हुए। इस बीच, पिछले सप्ताह जम्मू-कश्मीर में आतंकियों से लड़ते हुए शहीद पांचों जवानों के शव विगत मंगलवार को देहरादून के जौलीग्रांट एयरपोर्ट लाए गए।

उत्तराखंड की समृद्ध सैन्य परंपरा को अपने अदम्य साहस और पराक्रम से गौरवान्वित करने वाले अमर शहीदों की शहादत को कोटिशः नमन और अश्रुपूरित श्रद्धांजलि। इन शहीदों में जूनियर कमीशन अधिकारी (जेसीओ) समेत पांच जवान शहीद और पांच अन्य घायल हो गए थे। शहीद होने वाले जवानों में सूबेदार आनंद सिंह, हवलदार कमल सिंह, राइफलमैन अनुज नेगी, राइफलमैन आदर्श नेगी, नायक विनोद सिंह शामिल हैं।

गुस्ताखी माफ, कभी-कभी तो लगता है कि रणबांकुरों को लेकर समूचे भारतीय समाज का रुख ठंडा ही रहा है। इससे अधिक निराशाजनक बात क्या हो सकती है कि पाठ्यपुस्तकों में उन युद्धों पर अलग से अध्याय तक नहीं हैं, जिनमें हमारे जवानों ने जान की बाजी लगा दी। हमारे बच्चे आज भी मुगलों और अंग्रेजों के इतिहास ही पढ़ रहे हैं। हां, हम गणतंत्र दिवस और स्वाधीनता दिवस के मौके पर जवानों को याद करने की रस्म अदायगी जरूर कर लेते हैं। कुछ समय पहले खबर आई थी कि पंजाब के लुधियाना शहर के मुख्य चौराहे पर 1971 की जंग के नायक शहीद फ्लाइंग ऑफिसर निर्मलजीत सिंह सेंखो की आदमकद मूर्ति के नीचे लगी पट्टिका को ही उखाड़ दिया गया। लुधियाना सेखों का गृहनगर था। उन्हें अदम्य साहस और शौर्य के लिए मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया था। यह सिलसिला यहीं नहीं थम जाता। मोदीनगर (उत्तर प्रदेश) में 1965 युद्ध के नायक शहीद मेजर आशा राम त्यागी की मूर्ति देखकर तो किसी भी सच्चे भारतीय का कलेजा फटने लगेगा। इस तरह से दिल्ली सरकार ने भी शायद ही कभी कोशिश की हो कि 1971 की जंग के नायक अरुण खेत्रपाल के नाम पर किसी सड़क या अन्य स्थान का नामकरण किया जाए। मुगल और अंग्रेज शासकों के नाम पर सड़कों की भरमार है। कौन कहता है कि दिल्ली बे-दिल है। ये अपने शूरवीरों को याद रखती है। अब बातें-याद करें मेजर (डॉ.) अश्विन कान्वा की। वे भारतीय शांति रक्षा सेना (आईपीकेएफ) के साथ 1987 में जाफना, श्रीलंका गए थे। यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज के स्टुडेंट रहे थे मेजर अश्वनी कान्वा। हमेशा टॉपर रहे। मेजर कान्वा 3 नवंबर, 1987 को अपने कैंप में घायल भारतीय सैनिकों के इलाज में जुटे हुए थे।

उस मनहूस दिन शाम के वक्त उन्हें पता चला कि हमारे कुछ जवानों पर कैंप के बाहर ही हमला हो गया है। वे फौरन वहां पहुंचे। वे जब उन्हें फर्स्ट एड दे रहे थे तब छुपकर बैठे लिट्टे के आतंवादियों ने उन पर गोलियां बरसा दीं। अफसोस कि दूसरों का इलाज करने वाले डॉ. मेजर कान्वा को फर्स्ट एड देना वाला कोई नहीं था। बेहद हैंडसम मेजर अश्विनी की शादी के लिए लड़की ढूंढी जा रही थी जब वे शहीद हुए। वे तब 28 साल के थे। आपको इस तरह के न जाने कितने ही उदाहरण मिल जाएंगे। जरूरत है कि वतन के लिए अपनी जान का नजराना देने वालों को सदा याद रखे भारत।

(लेखक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं।)

जीवन के 100 बसंत की शुभकामनाएं-सम्पादक

पिताजी सहस्त्र चन्द्रदर्शन की ओर

जीवन की धूप-छाँह में चलते-फिरते, चढ़ते-उतरते पिताजी ने आज जीवनयात्रा के 83 हेमंत पूरे कर लिए। प्रचलित सूक्ति ऋतुराज वसंत और ऋतुरानी शरद के संदर्भ में है किंतु पिताजी के सम्बन्ध में हेमंत ही उचित है!

कारण, एक तो उनका जन्म हेमंत ऋतु में हुआ और दूसरा जीवन इतना संघर्षमय रहा कि वसंत और शरद प्रायः दुर्लभ ही रहे। फिर अपने व्यक्तित्व और कृतित्व में उन्होंने हेमंत को निर्विवाद रूप से जीवंत जो रखा। अतः आज पिताजी जीवन के 84वें हेमंत में मंगल प्रवेश कर रहे हैं!

अब पिताजी सहस्त्र चन्द्रदर्शन से चार पूनम दूर है और उनका तन-मन जिस कदर जिजीविषा से मालामाल है, निःसन्देह वे न केवल सहस्त्र चन्द्रदर्शन करेंगे अपितु दिव्य रथारोहण तक पहुँचेंगे। ये प्रार्थना नहीं, मेरा विश्वास है!

भारतीय संस्कृति में व्यक्ति के 60 वर्ष का होने पर षष्ठिपूर्ति का उत्सव है तो 75 वर्ष का होने पर अमृत महोत्सव की परंपरा है। इससे आगे जो व्यक्ति अपने जीवनकाल में एक हजार पूर्ण चन्द्र अर्थात् पूर्णमासी जी लेता है, वह सहस्त्र चन्द्रदृष्टा होता है।

यह यात्रा 83 बरस चार माह में पूरी होती है मगर अनेक लोग 81 वर्ष की आयु प्राप्त होने पर भी सहस्त्र चन्द्रदर्शन का उत्सव मना लेते हैं। इसके बाद 99 वर्ष 9 माह 9 दिन का होने पर दिव्य रथारोहण के उत्सव का विधान है। ईश्वर जिन पर कृपा करता है, वे दिव्य रथारोहण के उल्लास को प्राप्त करते हैं।

जीवन इतना क्षणभंगुर है फिर पिताजी या उनके सरीखे अनेक लोग कैसे आरोग्यमय दीर्घायु पा लेते हैं? कैसे उनके जीवन में सहस्त्र चन्द्रदर्शन घटता है और कैसे दिव्य रथारोहण का विश्वास-बीज पल्लवित होता है?

ठीक यही प्रश्न महाभारत के अनुशासन पर्व में युधिष्ठिर ने शरशय्याशायी पितामह भीष्म से पूछा था। उत्तर में भीष्म ने कहा-

आचारों भूतिजनन आचारः कीर्तिवर्धनः।
आचाराद वर्धते ह्यायुराचारो हन्त्यलक्षणम्ः।।

अर्थात् हे युधिष्ठिर! सदाचार ही कल्याण का जनक है और कीर्ति बढ़ाने वाला है। सदाचार से ही दीर्घायु प्राप्त होती है और सदाचार ही जीवन में अशुभ का स्वतः नाश करता है।

यह भी कि आगमानां हि सर्वेषामाचारः श्रेष्ठ उच्यते। आचारप्रभवो धर्मो धर्मादायुर्विवर्धते।।

अर्थात् सम्पूर्ण आगमों में सदाचार ही श्रेष्ठ है। सदाचार से धर्म की उत्पत्ति होती है और धर्म से दीर्घायु मिलती है।

जीवन में सदाचार की बात तो हम सब करते हैं लेकिन असल अर्थों में कितने सदाचार से जीये, इसका एकमात्र प्रमाण है दीर्घायु।

मुझे और मेरे परिवार को गर्व है कि हमारे कुलपुरुष सच्चे सदाचारी हैं। बस यही हमारी पूँजी है, यही हमारा प्राप्य है! मैं ऐसे अजातशत्रु पिता का अंश हूँ, बस इतना ही मेरा सौभाग्य है!

लेखक-विवेक चौरसिया आप दैनिक भास्कर उज्जैन के सम्पादक भी रहे, आज एक स्वतंत्र पत्रकार है।

मॉर्निंग वॉक के सदस्यों ने मंगलनाथ रोड पर किया गुलमोहर के पौधों का रोपण

उज्जैन। प्रातः कालीन भ्रमण मंडल मॉर्निंग वॉक के सदस्य ने एक पेड़ मां के नाम के अंतर्गत मंगलनाथ रोड स्थित डिवाइडर के बीच गुलमोहर के पौधों का वृक्षारोपण किया।

मॉर्निंग वॉक के सदस्य डॉ. घनश्याम शर्मा एवं गिरीश आर्य ने बताया कि प्रातः कालीन मॉर्निंग वॉक के सदस्यों ने 100 से अधिक पौधों का वृक्षारोपण एवं उनकी देखभाल कर बड़ा करने का संकल्प लिया है। उसी के अंतर्गत 21 जुलाई को करीब 20 से अधिक गुलमोहर के पौधों का वृक्षारोपण किया है।

वृक्षारोपण के दौरान मॉर्निंग वॉक के सदस्य हीरालाल सोलंकी के पोते अद्विक, ध्रुवकि एवं पोती ध्रुवरिष जो की 4 साल से 10 साल के बीच में थे उन्होंने भी वृक्षारोपण कर अधिक वृक्ष लगाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर मॉर्निंग वॉक के सदस्यों में महेंद्र जैन, मनसुखलाल झवर, शरद दिसावल, बसंत कुमार नीमा, महेश चौहान, खगेंद्रसिंह भदोरिया, प्रेम सेन, श्री पांडे एवं मालवीय आदि के साथ अनेक सदस्य गण उपस्थित थे।

कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक ने सांदीपनि आश्रम में पूजा की

उज्जैन। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर कलेक्टर श्री नीरज कुमार सिंह और पुलिस अधीक्षक श्री प्रदीप शर्मा ने सांदीपनि आश्रम में गुरु सांदीपनि की पूजा अर्चना की।

अपने धर्म, परंपरा और संस्कृति को कभी न छोड़े-महेश पुजारी

उज्जैन। महाकाल घाटी स्थित आश्रम चाणक्य पर गुरु पूर्णिमा उत्सव धूमधाम से मनाया गया। विभिन्न क्षेत्रों से आए शिष्यों सहित अखिल भारतीय पुजारी महासंघ, अखिल भारतीय युवा ब्राह्मण समाज एवं महाकाल सेना के सदस्यों ने गुरुदेव महेश पुजारी जी का पूजन किया।

रूपेश मेहता ने बताया गुरुदेव महेश पुजारी ने इस अवसर पर कहा कि चाहे कुछ भी हो जाए अपने धर्म, परंपरा और संस्कृति को कभी न छोड़े। धर्म और परंपरा की रक्षा के लिए अपने प्राण भी न्यौछावर करने पड़े तो पीछे न हटे। यहीं सच्ची गुरु दक्षिणा है। महाकाल सेना के प्रदेश प्रमुख अशोक राठौर, कप्तान बोबल ने साफा बांधकर गुरु पूजन किया। गुजरात के सूरत से आए हितेश

जरीवाला, कोलकाता की रूपा गांगुली, इंदौर के अशोक शुक्ला, शिशुपाल पटेल मित्र मंडल, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश से आए शिष्यों ने पूजन किया।

विजय पुजारी, महेंद्र सिंह बैंस, अर्पित पुजारी, आशीष अग्निहोत्री, आयुष पुजारी, मुकेश खंडेलवाल, राजेश बैरागी, निहिर पटेल, विमला राठौर, राजेंद्र गादीया, सुभाष यादव, रघुराज सिंह भदौरिया, नेहा भदौरिया, राम शर्मा, अंकित यादव, राकेश जोशी, घनश्याम दीक्षित, मंगल पुजारी, राजेंद्र खिमेसरा, राजेंद्र तिवारी, पवन कसेरा, शिवनारायण राठौर, एसपी श्रीवास्तव, दिलीप मगरवाल, मोहनलाल राठौड़, आयुष राठौर, राहुल पंडित, अरविंद शर्मा, बद्रीलाल पंवार, गोविंद व्यास, आशीष ठक्कर, किशन पांडे, सुधीर दुबे, सुरेश शर्मा, अरुण कुर्मी, विकास पटेल, यथार्थ पटेल, अभिषेक पटेल, संजय मेहरा आदि उपस्थित थे।

स्वताधिकारी/प्रकाशक मनमोहन शर्मा के लिये साप्ताहिक उज्जैन टाइम्स 110, तिरुपति एवेन्यू, होटल नत्रक्ष के पीछे, पंचक्रोशी मार्ग, उज्जैन (म.प्र.) से प्रकाशित एवं ज्योति ट्रेडर्स एवं प्रिन्टर्स न्यू रोड़, उज्जैन से मुद्रित।
● प्रधान सम्पादक : मनमोहन शर्मा मोबा. 9827233734 manmohan680@gmail.com (सभी वाद-विवादों का न्याय क्षेत्र उज्जैन रहेगा)। (म.प्र. शासन से 01-04-1997 से समाचार पत्र विज्ञापनों हेतु अनुमोदित)